डा. व्यं.वि. द्रविड,
स्म.ए. (संस्कृत-मराठी)
स्म.ए. (हिन्दी)
पीस्च.डी.
स्थानकोत्तर हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापूर।

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. उमाजी शंकर पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय की स्म्.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध " श्री ज्ञानदेव अग्निहोत्री के शुतुरमुर्ग नाटक का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में सफलता पुर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है। शोधार्थी ने मेरे सुझावोंका पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

(डॉ. व्ही.व्ही. द्रविड)
निर्देशक

कोल्हापूर

दिनांक : ९-४-९२

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्रख्यापन

यह लघु प्रबन्ध मेरी अपनी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय या अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नही की गयी है।

(उ.शं. पाटील)
शोधार्थी छात्र

कोल्हापूर
दिनांक : ९.४.९२

कृतज्ञता

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन में जिनसे सहयोग मिला, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। सर्वप्रथम तो मैं उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी रचनाओं का उपयोग मैंने सहायक ग्रंथों के रूप में किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का कार्य अनेक मान्यवर व्यक्तियों की शुभकामनाओं और शुभाशिषों का फल है। मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन कार्य के लिए श्रध्देय डॉ. व्यं.वि. द्रविड जी जैसे विद्वान गुरुवर मुझे निर्देशक के रूप में मिले, इसे मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ। अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी श्रध्देय डॉ. द्रविड जी का एक सफल निर्देशक के रूप में मुझ पर जो ऋण है, उससे ऋण हो पाना केवल असम्भव है। उनके अनमोल मार्गदर्शन के बिना यह शोधकार्य कदापि संपन्न न हो सकता। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभाग के प्रमुख डॉ. वसंत केशव मोरे जी, साथ ही साथ प्रा. एम्.के. तिमले, प्रा.श्रीमती रजनी भागवत, प्रा. जो.एस. हिरेमठ, प्रा. शरद कणबरकर आदि का मैं आभारी हूँ इनसे मुझे मार्गदर्शन मिला.।

दौलत शिक्षण संस्था के सचिव श्री के.वाय. केरकर, प्राचार्य नंदकुमार कदम - इन सज्जनो ने शोध प्रबन्ध के लिए जब मांगी तब सहायता दी है। मैं उनका आभारी हूँ।

उनके साथ ही कुन्दन चौगले, व्ही.व्हो.देसाई, प्रा. आरगे, प्रा. भापटे और कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक बंधुओं ने हमेशा शोध प्रबंध के बारेमें विचार-विमर्श करके सहायता की है, उन उब सज्जनोंका मैं हृदय से आभारी हुँ। ग्रामीण जीवन के अनेक विघ्न-बाधाओं को उठाते हुए मेरे श्रध्देय माताजी और पिताजी का ऋण भी आजीवन नहीं चुका सकूँगा।

सधन्यवाद।

प्रा क्क थ न

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय ` ज्ञानदेव अग्निहोत्री के शुतुरमुर्ग नाटक का अनुशीलन ` हैं । अध्यापन के और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति अध्ययन के सिलसिले में अग्निहोत्री के नाटक ` शुतुरमुर्ग ` पढने का अवसर मिला.। ` शुतुरमुर्ग ` पढकर अन्य प्रतीक नाटकों की अपेक्षा में कुछ अधिक प्रभावित हुआ । अब तक मैं केवल हिन्दी के साहित्यिक नाटकों से परिचित था ।

हिन्दी के अधिकांश नाटक केवल साहित्यिक गुणोंसे युक्त हैं, पर रंगमंच की दृष्टि से कुछ अपवाद छोड दें, तो वे निराश ही करते हैं । रंगमंच की इस कमी को अग्निहोत्री जी के नाटक कुछ पूर्णत: दे रहे थे । उनके ` शुतुरमुर्ग,` ` माटी जागी रे,` ` नेफा की एक शाम,` जैसे नाटक कथ्य और प्रयोग की दृष्टि से कुछ विशेष मालूम पडते हैं ।

अग्निहोत्री जी खुद एक अच्छे अभिनेता हैं । रंगमंच की दृष्टि से अग्निहोत्री जी ने अनेक प्रयोग किए । वे एक अच्छे प्रयोगधर्मी नाटककार हैं । उन्होंने कुल पूर्णांक सात नाटक लिखे । स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक साहित्य के विकास में अग्निहोत्री जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

स्वातंत्र्य-पूर्व कालीन नाटक केवल पढने की वस्तु बन गए थे । नाटक एक दृश्य काव्य हैं । रंगमंच उसका अभिन्न अंग हैं । मोहन राकेश, लाल, धर्मवीर भारती, मिश्र, आदि नाटककारों के साथ-साथ अग्निहोत्री जी ने इस त्रुटी को दूर करने का प्रयास विशेष गांभीर्य से किया ।

आकाशवाणी, दूरदर्शन, रंगमंच जहाँ भी संभव हो, ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने हिन्दी नाट्य साहित्य को प्रतिष्ठा देने का भरसक प्रयास किया । पर खेद की बात यह हैं, कि रंगमंच के लिए हिन्दी जगत् का ध्यान नहीं गया ।

कानपुर और बंबई जैसे महानगरों में प्रायोगिक नाट्य परंपरा को बनाए रखने में अग्निहोत्री जी ने विशेष कष्ट उठाए। शिल्प, शैली, कथ्य मंचन के अनेक प्रयोग उन्होंने किए हैं।

ऐसे प्रयोगधर्मी नाटककार के नाटकों का अनुशीलन मुझे एक आवश्यक बात लगी। उनके `शुतुरमुर्ग` नाटक का अनुशीलन करने का मेरा नम्र प्रयत्न रहा है।

उनके सभी पूर्णांक नाटकों का विवरण मैंने दिया है। इस प्रबंध में अग्निहोत्रीजी का साहित्यिक परिचय, हिन्दी के प्रतीक नाटक और प्रतीकात्मकता, शुतुरमुर्ग की शिल्प एवं मंचीयता, शुतुरमुर्ग की प्रतीकात्मकता आदि प्रयोगों के प्रस्तुत करने का मेरा नम्र प्रयास है।

विवेचन की सुविधाओं को ध्यान में लेकर मैंने इस प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में अग्निहोत्री जी का जन्म, शिक्षा, व्यवसाय, नाटक विधा की और आकर्षित होना, उनके पूर्णांक नाटकों का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी के प्रतीकात्मक नाटकों का विवरण दिया है। उसमें भारतेन्दु युग से पहले प्रतीक नाटक, भारतेन्दु युगीन प्रतीक नाटक, प्रसादयुगीन प्रतीक नाटक, प्रसादोत्तर प्रतीक नाटक, स्वातंत्र्योत्तर प्रतीक नाटक को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय में `शुतुरमुर्ग` नाटक की शिल्प एवं मंचीयता व्यक्त की है। इस विभाग में रंगमंच, रंगमंच का स्वरूप, व्यावसायिक, अव्यावसायिक रंगमंच, वेशभूषा, रंगभूषा, दृश्य सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, संगीत योजना, शुतुरमुर्ग की कथावस्तु, संवाद योजना, भाषा, चरित्र, चित्रण, अभिनेयता आदि विषय स्पष्ट किए हैं।

चतुर्थ अध्याय में ` शुतुरमुर्ग ` नाटक की प्रतीकात्मकता विवेचन किया गया है। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद जो नये मूल्य और नयी समस्याएँ निर्माण हो गई थी उसके यथार्थ दर्शन का वर्णन अग्निहोत्री के नाटकों में मिलते रहे। अग्निहोत्री के सामने बौध्दिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक युग था। परंपरा और अर्थाभाव की खींचातानी में पड़ा मध्यम-वर्ग था। सामाजिक विषमता, भ्रष्टाचार, जातिभेद, अवसरवाद लाचारी से भरा जीवन उनके सामने था। ये समस्याएँ दैनंदिन जीवन को ग्रस रही थी।

उनके नाटकों की विशेषता यह है, कि उनके नाटकों मे समस्याएँ केवल विचार के रूप में नहीं, तो अनुभूति का अंग बनकर आयी है। अग्निहोत्री जी ने अपने नाटक केवल समस्याओं के चित्रन के लिए नहीं लिखे, उन्होंने मानवी जीवन को अपने नाटकों का विषय बनाया है। अग्निहोत्री के एक एक नाटक में हमें अनेक समस्याएँ दिखाई देती है। इसीलिए मैने ` शुतुरमुर्ग नाटक के अध्ययन में रुचि रखी।

` शुतुरमुर्ग ` नाटक में संघर्ष का स्वरूप अत्यन्त सुक्ष्म एवं मानसिक है। मानवी हृदय में चली खलबली, मन में उठनेवाली परस्पर विरोधी भावनाएँ, और मस्तिष्क में उठनेवाली तर्क-वितर्क की बातों के रूप में यह संघर्ष दृश्य रूप में आया है।

वस्तुत: अग्निहोत्री के नाटक मध्यम वर्ग के जीवन का चित्रण करनेवाले है। उस वर्ग से सम्बन्धित नीति, परंपरा, शिक्षा, कला, न्याय, धर्म, मोह, भ्रष्टाचार, राजनीति, आदि अनेक विषयों को अपने नाटकों में उठाया है। विज्ञान और बुध्दिवाद के इस युग में निराश और टूटे मानव का यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है।

ऐतिहासिक, पौराणिक कथानक के माध्यम से आज की समाज व्यवस्था, राजनीतिक दबाव, सत्ता संघर्ष और शोषण नीति का उन्होंने उद्घाटन किया है। अतीत को वर्तमान से जोडने का प्रयत्न किया है। संवाद चुटकीले गागर में सागर भरनेवाले, संक्षिप्त, सुबोध, एवं संगठित है।

अग्निहोत्रीजी की ` शुतुरमुर्ग ` १९६८ की नाट्य-रचना है । आजकल ऐसी नाट्यरचनाएँ देशी-विदेशी भाषाओं में लिखी जा रही हैं । इस में केवल पुरातन कथा के माध्यम से प्राचीन पात्रों, प्रसंगों और परिस्थितियोंके माध्यम से समसामायिक समस्याओं का चित्रण किया हैं ।

` शुतुरमुर्ग ` कथा-प्रधान, या चरित्र-प्रधान नाटक नहीं हैं । वह अन्योक्ति ही हैं । अत: यहाँ के हर एक पात्र और हर एक प्रसंग द्वारा प्रस्तुत के बदले अप्रस्तुत की व्यंजना हुई हैं ।

अग्निहोत्री एक प्रयोगधर्मी नाटककार हैं । वे समाज जीवन में उदारमतवादी, व्यक्तिवादी चेतना के स्रष्टा रहे। भूतकालीन घटनाओं द्वारा समसामायिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया हैं । ` शुतुरमुर्ग ` नाटक के पात्र सामाजिक समस्या को लेकर प्रस्तुत होते हैं, फिर भी वे व्यक्ति की प्रतिष्ठा को अभिव्यक्त करके ही रहते हैं ।